सूरह माइदह – 5

ये सूरत मदनी है

Disclaimer:

Arshad Basheer madani ke urdu books ko Roman English mai lane wale ahbab Mubarakbadi ke mustahiq hai ke unoun ne asan kia urdu reading Na janne Waloun ke liye

الحمد لله

فجزاكم الله خيرا

Note : arshad basheer madani ne Word to Word check nahi kia Kiunke bohut books ko roman Kia gaya un sab ko Check karna asan nahi, time ka commitment deegar Urdu books Aur syllabus par laga huva hai is liye badi mazirat ke sat arz hai ke jahan kahin apko pronunciation ya talaffuz mai Diqqat lage Urdu Janne Waloun se asal Kitab ki taraf rujoo farmaen in sha Allaah in sha Allaaah

Askislampedia ki Team ka shukriya ke Roman mai book lane mai madad faramee

Khas tour se

Riaz bhai , shaikh abdullah Umeri, faheem iqbal , Mushtaq ahmed Aur baz sisters bhi hain jo madad kie Aur kuch brothers bhi madad kie Likin ijazat nahi hai ke unka naam zikr Kia jae Allaah qabool farmae sab ki mahant

****

Ameen

Shukriya

Shoba e nashro ishaat,

Askislampedia

बाज़ अहदाफ

- **इस सूरत का हदफ़ है अहद व पैमान की पासदारी|** 36

- घरेलू, माशिरती, समाजी, आलमी व माशी मसाइल और दहशत गरदी के खात्मे के लिए programming ज़रूरी है और वो आखिरत के हिसाब व किताब के खौफ से ही मुमकिन है| (5:32)
- मुआशरे (society) को मनज्ज़ल मिनल्लाह तरीखे पर ले जाने की तालीम दी गयी है|
- ईसाई अखीदे की रद्द में और तौहीद की तरघीब पर काफी वज़ाहत से बात की गयी|
- तहलील व तह्रीम, अम्र व नहीं और जाहिलियत के मसाइल का ज़िकर किया गया है|

---

36 तफसीर ए तबरी p.477-449

बाज़ मौज़ूआत

1. हलाल व हराम का और अहद व पैमान को पूरा करने का बयान| (1-5)
2. वज़ू के वजूब, फिर घुस्ल और पानी न मिलने पर तयम्मुम का बयान| (6)
3. नेमतों के ज़रिये तज़कीर की गयी और फैसला और गवाही में इन्साफ का हुकुम दिया गया| (7-11)
4. अहले किताब के बाज़ अहवाल और उनकी अहद शिकनी का बयान| (12-14)
5. अहले किताब को रसूलुल्लाह ﷺ और कुरआन के ज़रिये से नसीहत की गयी जो इंसानों को हिदायत का रास्ता बतलाता है| (15-16)
6. अहले किताब के बाज़ एतेराज़ात और उनकी तरदीद| (17-19)
7. यहूदियों का मौखिफ अपने नबी मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में| (20-26)
8. हबील और खबील का खिस्सा, और पहले खत्ल का तज़किरह| (27-31)
9. खत्ल और ज़मीन में फसाद फैलाने की सज़ा का बयान| (32-34)
10. नेक अमल के ज़रिये अल्लाह का तखर्रुब हासिल करने की फ़ज़ीलत| (35)
11. खियामत के दिन काफिरों के अज़ाब का बयान| (36-37)
12. चोरी और उसके हद का बयान| (38-40)
13. काफिरों, मुनाफिखों और यहूदियों को जो सज़ा मिलने वाली है उसका तज़किरह| (41-43)
14. तौरात, इंजील और कुरआन ए मजीद तमाम आसमानी किताबें आपस में एक दूसरे की तस्दीख करती है और कुरआन पहली तमाम किताबों को मंसूख करता है, इसके मुताबिख फैसला वाजिब है| (44-50)
15. उन लोगों से दोस्ती की हुरमत जो मोमिन नहीं है और रसूल ﷺ और मोमिनों से दोस्ती का हुकुम| (51-58)

16. अहले किताब की बुरी आदतें बयान की गयी है, ख़ास तौर पर यहूदियों का मोमिनों और अपने रब के साथ मुआमला| (59-71)
17. अल्लाह के साथ नसारा के शिर्क का बयान| (72-76)
18. अहले को दीन में गुलू करने से मना किया गया और उनमे इनकार करने वालों पर लानत की गयी| (77-81)
19. यहूद और मुशरिकीन दुश्मनी में सख्त है और नसारा अखरब है मुस्लिम के| (82-86)
20. अल्लाह ने जो हलाल किया वो पाक है, इसको खाना चाहिए, उसको हराम कर लेना जाएज़ नहीं| (87-88)
21. खसम का हुकुम और उसके तोड़ने का कफ्फारा बयान किया गया| (89)
22. शराब, जुवा, इंसाब (बुत परस्ती), इज़लाम (खुरा की तीर) से मना किया गया और तौबा की फ़ज़ीलत बयान की गयी| (90-93)
23. हालात ए एहराम में शिकार के अहकाम और हुरमत वाले महीनो का बयान| (94-100)
24. कसरत ए सवाल से मना किया गया और जाहिलियत की गुमराहियों का तज़किरह और मोमिनो को उससे धोका खाने से रोका गया| (101-105)
25. मौत के वख्त वसीयत पर गवाह रखने का हुकुम| (106-108)
26. खियामत के दिन रसूलों से सवाल के उनकी खौम ने उन्हें क्या जवाब दिया| (109)
27. ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम के मुआजिज़ात का ज़िकर और आसमान से नाज़िल होने वाले दस्तर ख्वान का तज़किरह| (110-115)
28. ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम और अल्लाह के दरमियान मुकालिमा| (116-118)
29. खियामत के दिन सच्चे लोगों का बदला और अल्लाह की खुदरत के बाज़ दलाइल| (119-120)

बाज़ अस्बाख

1. इस सूरत में मखासिद ए शरियत का ज़िकर है, जो पांच 5 है: 37
    - ❖ दीन की हिफाज़त: खाला ताला: (----------) (अल माइदा:54)
      तरजुमा: ए ईमान वालों! तुम में से जो शख्स अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह ताला बहुत जल्द ऐसी खौम को लाएगा, जो अल्लाह की महबूब होगी और वो भी अल्लाह से मुहब्बत रखती होगी, वो नर्म दिल होंगे मुसलामानों पर, सख्त और तेज़ होंगे कुफ्फार पर, अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह भी न करेंगे, ये है अल्लाह ताला का फ़ज़ल, जिसे चाहे दे, अल्लाह बड़ी वुसात वाला और ज़बरदस्त इल्म वाला है|

- ❖ जान की हिफाज़त: (----------) (अल माइदा:32)
  तरजुमा: इसी वजह से हमने बनी इस्राईल पर ये लिख दिया के जो शख्स किसी को बघैर उसके के वो किसी का खातिल हो या ज़मीन में फसाद मचाने वाला हो, खतल कर डाले तो गोया उसने तमाम लोगों को खतल कर दिया, और जो शख्स किसी एक की जान बचा ले, उसने गोया तमाम लोगों को ज़िन्दा कर दिया और उनके पास हमारे बहुत से रसूल ज़ाहिर दलीलें लेकर आये, लेकिन फिर उसके बाद भी उनमे अक्सर लोग ज़मीन में ज़ुल्म व ज़ियादती और ज़बरदस्ती करने वाले ही रहे|

- ❖ इज्ज़त की हिफाज़त: (----------) (अल माइदा:5)
  तरजुमा: कुल पाकीज़ाह चीज़ें आज तुम्हारे लिए हलाल की गयी और अहले किताब का ज़बीहा तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा ज़बीहा उनके लिए हलाल है, और पाक दामन मुसलमान औरतें और जो लोग तुम से पहले दिए गए है उनकी पाक दामन औरतें भी हलाल है जबके तुम उनका महर अदा करो, इसी तरह के तुम उनसे ब खाइदा निकाह करो, ये नहीं के अलानिया ज़िना करो या पोशीदा बदकारी करो, मुन्किरीन ए ईमान के आमाल और अकारत है और आखिरत में वो हारने वालों में से है|

- ❖ माल की हिफाज़त: (----------) (अल माइदा:38)
  तरजुमा: चोरी करने वाले मर्द और औरत के हाथ काट दिया करो| ये बदला है उसका जो उन्होंने किया, अज़ाब अल्लाह की तरफ से और अल्लाह खुव्वत व हिकमत वाला है|

- ❖ अखल की हिफाज़त: खाल ताला: (----------) (अल माइदा:90)
  तरजुमा: ऐ ईमान वालों! बात यही है के शराब और जुव्वा और थान और फाल निकालने के पांसे के तीर, ये सब गन्दी बातें, शैतानी काम है, उनसे बिलकुल अलग रहो, ताके फलाह याब हो|

2. अहद व पैमान को पूरा करना ईमान का तखाज़ा है|
3. नेकी और खैर के कामों में ताव्वुन करना तख्वे की अलामत है|
4. दीन ए इस्लाम अल्लाह का पसंदीदा दीन है, जो मुकम्मल और कामिल है|
5. हलाल व हराम की तमीज़ करना अल्लाह और बन्दों के दरमियान अहद व पैमान है|

6. दीन ए इस्लाम पाकी व सफाई को पसंद करता है, इसी लिए उसने गुसल, वजू और तयम्मुम का हुकुम दिया है|
7. इस्लाम इबादत, मुआमलात और अख्लाखियात में मुकम्मल है, इसमें किसी भी खिसम का इज़ाफा या नुख्स नहीं हो सकता|
8. अहद तोडना यहूद का शेवा है|
9. मुहम्मद ﷺ की बासत का मख्सद गुज़रे हुए मज़ाहिब की तालीमात को फिर से ज़िन्दा करना है|
10. ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा कहना कुफ्र है, वो तो अल्लाह के बन्दे और रसूल है|
11. अल्लाह की ना फ़रमानी करने वाला अल्लाह का महबूब नहीं हो सकता, चाहे वो यहूदी हो या नसरानी हो|
12. यहूद न तो अल्लाह का एहतेराम करते है और न ही रसूलों और फरिश्तों का|
13. यहूद की ना फरमानियों से तंग आकर मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने खौम के दरमियान तफरीख की दुआ की|
14. इन्सान के खून की अहमियत और खदर सिर्फ इस्लाम की तालीमात में है|
15. अल्लाह के अहकाम को “समीना व अताना” कह कर खबूल करना लाज़िम है|
16. अल्लाह के फैसलों पर राज़ी होना ईमान की निशानी है|
17. अम्बिया व रुसुल को भेजना अल्लाह की रहमत है|
18. यहूद व नसारा से दोस्ती ज़लालत व गुमराही का सबब बनती है|
19. यहूद व नसारा से दोस्ती नहीं कर सकते क्यों के ये किसी का भला नहीं चाहते|
20. जब यहूद अल्लाह ताला का पास व लिहाज़ नहीं रखते तो फिर मोमिनों का पास व लिहाज़ कैसा रखेंगे|
21. अहले ईमान के सबसे सख्त तरीन दुश्मन यहूद और मुशरिकीन है|
22. अहले किताब की दीन से दूरी ने उन्हें अल्लाह की नज़र में मज्गूज़ बना दिया|
23. अल्लाह के सच्चे वली और दोस्त अहले ईमान है|
24. इस उम्मत की इस्लाह तौहीद ए बारी ताला और खालिस इत्तेबा ए सुन्नत से हो सकती है|
25. अल्लाह दायियाने हख की हिफाज़त फरमाता है|
26. अम्र बिल मारूफ और नहीं अनिल मुनकर से गुरेज़ अल्लाह की लानत और अज़ाब का सबब है|
27. ईसा अलैहिस्सलाम का इंसान होना उनके इलाह न होने की सब से बड़ी दलील है|
28. पाकीज़ह चीज़ों को अल्लाह ने हलाल किया है|
29. शैतान शराब और जुव्वे के ज़रिये इंसानों को अल्लाह और उसकी याद से घाफिल करना चाहता है|
30. पाक और ना पाक बराबर नहीं हो सकते अगर चे के ना पाक की कसरत हो जाए|
31. किसी भी चीज़ की कसरत उसके हलाल होने की दलील नहीं हो सकती|

32. अल्लाह से डरना और तख्वा इख्तियार करना अखलमंदी और कामयाबी की अलामत है|
33. हलाल रिज्ख का एक लुख्मा हराम रिज्ख के तमाम खानों से बेहतर है|
34. हलाल व हराम की मशूरियत सिर्फ अल्लाह के हाथ में है|
35. आखिरत में कोई भी बाज़ पुर्स से नहीं बच सकता|
36. रोज़ ए खियामत नसारा अपने बातिल अखाइद पर नादिम होंगे|
37. रोज़ ए खियामत सिर्फ अहले ईमान ही कामयाब हो सकते है|

37 (इमाम शातिबी की मुवाफिखत और एतेसाम भी ज़रूर पढ़िए, the legislation guarding the five necessities (हिफ्ज़ उस शरिया लिज़ ज़रूरियाती फिखहियह) – अब्दुल करीम ज़ैदान और Dr हकम a.zummo अल अखिली, अल खवाइद अल खम्स उल कुबरा लिस शैख़ अर रूहैली खवाइद ए फिखहियह)

मुनासिबत / लतैफुत तफसीर

- सूरह बखरह, सूरह आले इमरान और सूरह निसा में अहकाम व मसाइल के ज़िकर के साथ अहले किताब के शुबहात का रद्द और इसबात नबुव्वत के साथ बनी इस्राईल की माज़ूली और बनी इस्राईल की सरताजी का एलान किया गया| जबके सूरह माइदा अहद व पैमान के बारे में नाज़िल हुई|
- बनी इस्राईल ने अहद व पैमान पूरा न किया| ईमान वालों "----------" के दाइरे में न आ जाना बलके "औफु बिलुखूद" के ज़ुमरे में शामिल हो जाये|
- सूरह निसा और माइदा में यहूद व नसारा दोनों के सवालात के जवाबात दिए गए है|
- सूरह माइदा में ईसाइओं का ज़िक्र जबके सूरह निसा में यहूदियों का ज़िक्र किया गया है|

हिफ्ज़ व तदब्बुर आयात व हदीस बराये तज़कीर, तज़किया, दावत और इस्लाह

आयत 1: खाल ताला: (----------) (अल माइदा:3)
तरजुमा: तुम पर हराम किया गया मुरदार और खून और खिंज़ीर का गोश्त और जिस पर अल्लाह के सिवा दूसरे का नाम पुकारा गया हो और जो गला घुटने से मरा हो और जो किसी ज़र्ब से मर गया हो और जो ऊंची जगह से गिर कर मर गया हो और किसी के सींग मारने से मरा हो और जिसे दरिंदों ने फाड़ खाया हो, लेकिन तुम उसे ज़ुबह कर डालो तो हराम नहीं और जो आस्तानों पर ज़ुबह किया गया हो और ये भी के खुरा के तीरों के ज़रिये फाल गिरी करो, ये सब बदतरीन गुनाह है, आज कुफ्फार

तुम्हारे दीन से ना उम्मीद हो गए, खबरदार! तुम उनसे न डरना और मुझसे डरते रहना, आज मैंने तुम्हारे लिए दीन को कामिल कर दिया और तुम पर अपना इनाम भर पूर कर दिया और तुम्हारे लिए इस्लाम के दीन होने पर रज़ा मंद हो गया| पस जो शख्स शिद्दत की भूक में बे खरार हो जाये ब शर्त ये के किसी गुनाह की तरफ उसका मीलान न हो तो यखीनन अल्लाह ताला माफ़ करने वाला और बड़ा मेहरबान है|

आयत 2: खाल ताला: (----------) (अल माइदा:32)
तरजुमा: इसी वजह से हमने बनी इस्राईल पर ये लिख दिया जो शख्स किसी को बघैर उसके वो किसी का खातिल हो या ज़मीन में फसाद मचाने वाला हो, ख़तल कर डाले तो गोया उसने तमाम लोगों को ख़तल कर दिया और जो शख्स किसी एक की जान बचा ले, उसने गोया तमाम लोगों को ज़िन्दा कर दिया और उनके पास हमारे बहुत से रसूल ज़ाहिर दलीलें लेकर आयें, लेकिन फिर उसके बाद भी उनमे के अक्सर लोग ज़मीन में ज़ुल्म व ज्यादती और ज़बरदस्ती करने वाले ही रहे|

हदीस 1: (----------) (अत तिरमिज़ी:2169, सहीह)
तरजुमा: हुज़ैफह बिन यमान रज़िअल्लाहुअन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया, उस रब की खसम जिसके हाथ में मेरी जान है अम्र बिल मारूफ और नहीं अल मुनकर करते रहो वरना खरीब है के अल्लाह ताला तुम लोगों पर अज़ाब भेज दे और तुम उससे दुआएं मांगो और वो खबूल न करे|

हदीस 2: खाल ताला: (----------) (सहीह इब्ने हिब्बान:4938, सहीह)
तरजुमा: इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहुअन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने आसमान की तरफ देखा और कहा: अल्लाह यहूद को हलाक करे, उन पर चर्बी हराम की गयी तो वो उसे बेचते और उसकी खीमत खा जाते, हालां के अल्लाह जब किसी चीज़ को हराम करता है तो उसकी खीमत भी हराम कर देता है|

हदीस 3: खाल ताला: (----------) (अल बुखारी:3166)
तरजुमा: अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़िअल्लाहुअन्हु ने बयान किया के नबी ﷺ ने फरमाया: “जिस ने किसी ज़म्मी को (ना हख) ख़तल किया वो जन्नत की खुशबू भी न पा सकेगा| हालां के जन्नत की खुशबू चालीस साल की राह से सूंघी जा सकती है|